REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
VOLUME - 11 | ISSUE - 6 | MARCH - 2022

आभासी कक्षा-कक्ष में सफल ऑनलाइन शिक्षण हेतु युक्तियाँ एवं प्रविधियाँ

डॉ. दिपिका आर. चौधरी
(आसिस्टेन्ट प्रोफेसर)
श्रीमती एस. आई. पटेल ईप्कोवाला कॉलेज ऑफ एज्युकेशन पेटलाद (गुजरात)

प्रपत्र सारांश

कोविड-19 महामारी ने मानव जीवन के विविध आयामों को गहराई से प्रभावित किया, जिनमें शिक्षा का क्षेत्र विशेष रूप से उल्लेखनीय है। पारंपरिक शिक्षण-पद्धति, जो प्रत्यक्ष उपस्थिति और संवाद पर आधारित थी, अचानक अवरुद्ध हो गई। ऐसी परिस्थिति में ऑनलाइन शिक्षण केवल एक वैकल्पिक व्यवस्था न रहकर शिक्षण-अधिगम की निरंतरता का प्रमुख माध्यम बन गया। प्रस्तुत लेख में आभासी कक्षा-कक्ष को प्रभावी, सुगठित, छात्र-केंद्रित और संवादपरक बनाने के लिए आवश्यक युक्तियों एवं प्रविधियों का विवेचन किया गया है। इसमें उपयुक्त डिजिटल साधनों के चयन, विद्यार्थियों हेतु आवश्यक संसाधनों की उपलब्धता, प्रभावपूर्ण संप्रेषण-कौशल, शिक्षक-विद्यार्थी के जीवंत संबंध, आभासी शिक्षण वातावरण की सृजना, अधिगम को सरल एवं सुबोध बनाने वाले उपाय तथा सतत रचनात्मक प्रतिपुष्टि जैसे महत्त्वपूर्ण पक्षों पर विचार किया गया है।

यह अध्ययन इस तथ्य को रेखांकित करता है कि सफल ऑनलाइन शिक्षण केवल तकनीकी दक्षता पर निर्भर नहीं करता, बल्कि शिक्षक की शैक्षिक दृष्टि, पूर्व-तैयारी, संवेदनशीलता, सृजनात्मकता तथा विद्यार्थियों की अधिगम-आवश्यकताओं की सम्यक् समझ पर आधारित होता है। यदि शिक्षण प्रक्रिया में उपयुक्त मंचों, सुलभ अध्ययन-सामग्री, सहभागितापूर्ण रणनीतियों और नियमित मार्गदर्शन का संतुलित समावेश किया जाए, तो आभासी कक्षा-कक्ष भी पारंपरिक शिक्षण जितना ही प्रभावशाली सिद्ध हो सकता है। अतः वर्तमान और भावी शिक्षा-व्यवस्था में ऑनलाइन शिक्षण को केवल आपातकालीन व्यवस्था के रूप में नहीं, बल्कि एक सशक्त, लचीले और दूरगामी शैक्षिक माध्यम के रूप में स्वीकार किया जाना चाहिए।

प्रमुख चावीरूप शब्द : आभासी कक्षा-कक्ष, ऑनलाइन शिक्षण, शैक्षिक प्रौद्योगिकी, संप्रेषण-कौशल, रचनात्मक प्रतिपुष्टि।

➢ प्रस्तावना

इक्कीसवीं शताब्दी का वर्तमान काल सूचना, संचार और डिजिटल प्रौद्योगिकी की तीव्र उन्नति का काल है। इस परिवर्तन का प्रभाव शिक्षा-जगत पर भी व्यापक रूप से पड़ा है। विशेषतः कोविड-19 महामारी के दौरान जब विद्यालय, महाविद्यालय और विश्वविद्यालयों के द्वार बंद हो गए, तब शिक्षा की निरंतरता बनाए रखने का दायित्व ऑनलाइन शिक्षण ने संभाला। यह परिवर्तन अचानक अवश्य था, परन्तु उसने शिक्षण-पद्धतियों के पुनर्विचार का अवसर भी प्रदान किया।

आभासी कक्षा-कक्ष का विचार इसी संदर्भ में अत्यंत सार्थक बनकर उभरता है। यह ऐसा शैक्षिक मंच है जहाँ शिक्षक और विद्यार्थी भौतिक दूरी के बावजूद ज्ञान, संवाद, सहभागिता और अधिगम की प्रक्रिया से जुड़े रहते हैं। यद्यपि यह प्रत्यक्ष कक्षा-कक्ष का पूर्ण प्रतिस्थापन नहीं है, तथापि परिस्थिति की माँग के अनुरूप यह प्रभावी शिक्षण का समर्थ माध्यम सिद्ध हुआ है। सफल ऑनलाइन शिक्षण के लिए केवल

उपकरणों की उपलब्धता पर्याप्त नहीं, बल्कि शिक्षण की सुविचारित योजना, सशक्त प्रस्तुतीकरण, संवेदनशील संवाद और शिक्षार्थी-अनुकूल वातावरण भी अनिवार्य हैं। प्रस्तुत लेख में इन्हीं आवश्यक तत्त्वों का क्रमबद्ध विवेचन किया गया है।

➢ अध्ययन की आवश्यकता

ऑनलाइन शिक्षण ने शिक्षा के क्षेत्र में एक नई दृष्टि का उद्घाटन किया है। इसके माध्यम से भौगोलिक दूरी, समयगत सीमाएँ और प्रत्यक्ष उपस्थिति की बाधाएँ आंशिक रूप से समाप्त हुई हैं। तथापि, इसके समक्ष अनेक व्यावहारिक चुनौतियाँ भी हैं, जैसे तकनीकी असमानता, संसाधनों की कमी, विद्यार्थियों की एकाग्रता, संवाद में अंतराल, तथा शिक्षक-विद्यार्थी संबंधों में औपचारिकता की वृद्धि। ऐसी परिस्थितियों में यह आवश्यक है कि आभासी कक्षा-कक्ष को प्रभावी बनाने वाली युक्तियों और शिक्षण-प्रविधियों पर गंभीर विचार किया जाए। यह अध्ययन इसी शैक्षिक आवश्यकता की पूर्ति की दिशा में एक सार्थक प्रयास है।

➢ अध्ययन के उद्देश्य

इस लेख के प्रमुख उद्देश्य निम्नवत् हैं:

- आभासी कक्षा-कक्ष में सफल ऑनलाइन शिक्षण के आवश्यक तत्त्वों को स्पष्ट करना।
- उपयुक्त डिजिटल उपकरणों एवं शैक्षिक मंचों की उपयोगिता को रेखांकित करना।
- विद्यार्थियों हेतु आवश्यक संसाधनों की उपलब्धता के महत्त्व को प्रतिपादित करना।
- प्रभावी संप्रेषण, सहभागिता और प्रतिपुष्टि के माध्यम से शिक्षण की गुणवत्ता को सुदृढ़ करने वाले उपायों का प्रस्तुतीकरण करना।
- आभासी शिक्षण को अधिक जीवंत, रोचक और शिक्षार्थी-केंद्रित बनाने की प्रविधियों का विवेचन करना।

➢ आभासी कक्षा-कक्ष में सफल ऑनलाइन शिक्षण की प्रमुख युक्तियाँ एवं प्रविधियाँ

- **उपयुक्त डिजिटल उपकरणों का चयन**

ऑनलाइन शिक्षण की सफलता का प्रथम आधार सही तकनीकी मंच का चयन है। वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग प्लेटफॉर्म, जैसे Zoom, Microsoft Teams, WebEx अथवा Google Meet, शिक्षक और शिक्षार्थी के मध्य संवाद का सेतु निर्मित करते हैं। इनके अतिरिक्त नोट-संकलन उपकरण, कार्य-प्रबंधन मंच तथा लर्निंग मैनेजमेंट सिस्टम शिक्षण को व्यवस्थित, अनुशासित और परिणामोन्मुख बनाते हैं। उचित उपकरण का चयन करते समय उसकी सुलभता, सहजता, उपयोगिता, तकनीकी विश्वसनीयता तथा विद्यार्थियों के लिए उसकी उपलब्धता का ध्यान रखना आवश्यक है। यदि माध्यम अनुकूल होगा, तभी शिक्षण प्रक्रिया सुचारु रूप से चल सकेगी।

- **आवश्यक संसाधनों की उपलब्धता**

आभासी शिक्षण की प्रभावशीलता इस तथ्य पर भी निर्भर करती है कि विद्यार्थियों के पास आवश्यक उपकरण और इंटरनेट सुविधा उपलब्ध है या नहीं। सभी शिक्षार्थियों की सामाजिक, आर्थिक और तकनीकी परिस्थितियाँ समान नहीं होतीं। अतः यह आवश्यक है कि शिक्षण-सामग्री ऐसे रूप में तैयार की जाए जो मोबाइल, लैपटॉप और डेस्कटॉप जैसे विविध माध्यमों पर समान रूप से सुलभ हो। साथ ही, विद्यार्थियों को प्रयुक्त मंचों और साधनों के उपयोग का बुनियादी प्रशिक्षण भी दिया जाना चाहिए। शिक्षण तभी समावेशी होगा, जब संसाधनों की दृष्टि से सभी को सहभागिता का समान अवसर प्राप्त हो।

- **प्रभावशाली संप्रेषण-कौशल**

आभासी कक्षा में शिक्षक का व्यक्तित्व मुख्यतः उसके शब्दों, स्वर, गति, स्पष्टता और प्रस्तुतीकरण के माध्यम से ही प्रकट होता है। प्रत्यक्ष कक्षा में जहाँ हाव-भाव, शारीरिक उपस्थिति और प्रत्यक्ष संपर्क संवाद को समर्थ बनाते हैं, वहीं ऑनलाइन शिक्षण में शिक्षक को अधिक सजग, सुस्पष्ट और योजनाबद्ध होना पड़ता है। वाणी में संतुलन, विषय-वस्तु में क्रमबद्धता, प्रश्नोत्तर की सक्रियता तथा विद्यार्थियों को संवाद के लिए प्रेरित करने की शैली ऑनलाइन शिक्षण को प्रभावकारी बनाती है। संप्रेषण जितना जीवंत और आत्मीय होगा, शिक्षार्थी उतने ही गहरे रूप से उससे जुड़े रहेंगे।

- **विद्यार्थी के साथ जीवंत संबंधों का संरक्षण**

आभासी कक्षा की एक प्रमुख चुनौती यह है कि छात्र का ध्यान शीघ्र विचलित हो सकता है। इसलिए शिक्षक को अपनी शिक्षण-शैली में ऐसी सजीवता, रचनात्मकता और सहभागिता का समावेश करना चाहिए जिससे छात्र निरंतर सक्रिय बने रहें। पाठ को छोटे-छोटे खंडों में विभाजित करना, दृश्य सामग्री का उपयोग करना, प्रश्न पूछना, मुक्त चर्चा को बढ़ावा देना तथा विद्यार्थियों की रुचि के अनुरूप उदाहरण देना इस दिशा में उपयोगी उपाय हैं। शिक्षक और विद्यार्थी के बीच भावात्मक निकटता, विश्वास और आत्मीयता का विकास ऑनलाइन शिक्षण को अधिक मानवीय और प्रभावशाली बनाता है।

- **आभासी वातावरण में शैक्षिक परिवेश का निर्माण**

कक्षा-कक्ष केवल चार दीवारों का नाम नहीं, बल्कि वह एक जीवंत शैक्षिक वातावरण है, जो मन को अध्ययन के लिए उन्मुख करता है। ऑनलाइन शिक्षण में भी इस वातावरण का पुनर्सृजन संभव है। शिक्षक यदि व्यवस्थित पृष्ठभूमि, उपयुक्त प्रकाश, स्पष्ट दृश्यता और शैक्षिक संकेतों का उपयोग करें, तो विद्यार्थियों पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। पुस्तकों, बोर्ड अथवा अन्य शैक्षिक प्रतीकों से युक्त परिवेश शिक्षण को औपचारिक गंभीरता प्रदान करता है। इस प्रकार आभासी कक्षा में भी अध्ययन का मनोवैज्ञानिक वातावरण निर्मित किया जा सकता है।

- **अधिगम को सुगम और सुलभ बनाना**

ऑनलाइन शिक्षण की प्रक्रिया में अनेक बार विद्यार्थी कुछ अंशों को समझने से वंचित रह जाते हैं, चाहे वह तकनीकी व्यवधान के कारण हो या एकाग्रता में कमी के कारण। ऐसे में शिक्षक को नोट्स, रिकॉर्डेड व्याख्यान, ट्रांसक्रिप्शन, साझा प्रस्तुतीकरण तथा पुनरावलोकन-सामग्री उपलब्ध करानी चाहिए। इससे छात्र अपनी सुविधा और गति के अनुसार पुनः अध्ययन कर सकते हैं। लचीला अधिगम, पुनरावृत्ति की संभावना और विविध अधिगम-शैलियों के अनुरूप सामग्री का प्रस्तुतीकरण ऑनलाइन शिक्षा को अधिक न्यायसंगत और प्रभावशाली बनाता है।

- **नियमित एवं रचनात्मक प्रतिपुष्टि**

शिक्षण की प्रक्रिया केवल ज्ञान-प्रदान तक सीमित नहीं रहती; वह मार्गदर्शन, सुधार और प्रोत्साहन की भी अपेक्षा करती है। आभासी कक्षा में विद्यार्थी प्रायः स्वयं को अकेला अनुभव कर सकते हैं। इस स्थिति में शिक्षक की नियमित, समयोचित और रचनात्मक प्रतिपुष्टि अत्यंत महत्त्वपूर्ण हो जाती है। प्रतिपुष्टि के माध्यम से शिक्षक न केवल त्रुटियों का परिमार्जन करता है, बल्कि विद्यार्थी के आत्मविश्वास को भी पुष्ट करता है। यदि यह प्रतिपुष्टि प्रोत्साहन, संवेदनशीलता और स्पष्ट दिशा-निर्देशों के साथ दी जाए, तो अधिगम अधिक स्थायी और अर्थपूर्ण बनता है।

➢ शैक्षिक निहितार्थ

यह अध्ययन स्पष्ट करता है कि ऑनलाइन शिक्षण की सफलता के लिए तकनीक और शिक्षाशास्त्र का संतुलित समन्वय आवश्यक है। शिक्षक-प्रशिक्षण कार्यक्रमों में डिजिटल दक्षता, आभासी संप्रेषण-कौशल, शिक्षार्थी मनोविज्ञान तथा डिजिटल संसाधनों के सृजनात्मक उपयोग को समुचित स्थान दिया जाना चाहिए। शिक्षा-संस्थानों को भी ऐसी संरचना विकसित करनी होगी जिससे विद्यार्थियों को समान अवसर, तकनीकी सहयोग और गुणवत्तापूर्ण शैक्षिक सामग्री उपलब्ध हो सके। भविष्य की मिश्रित शिक्षण-पद्धति में यह अध्ययन उपयोगी दिशा-निर्देशक सिद्ध हो सकता है।

➢ निष्कर्ष

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि आभासी कक्षा-कक्ष आधुनिक शिक्षा-व्यवस्था की एक महत्त्वपूर्ण उपलब्धि है, जिसने संकट के समय शिक्षण-अधिगम की ज्योति को निरंतर प्रज्वलित रखा। यद्यपि ऑनलाइन शिक्षण के समक्ष अनेक चुनौतियाँ विद्यमान हैं, तथापि उपयुक्त उपकरणों, संसाधनों, संवेदनशील शिक्षण-दृष्टि, प्रभावशाली संप्रेषण, छात्र-केंद्रित रणनीतियों और रचनात्मक प्रतिपुष्टि के माध्यम से इसे अत्यंत सशक्त और परिणामकारी बनाया जा सकता है। आवश्यक यह है कि हम इसे केवल परिस्थितिजन्य व्यवस्था न मानें, बल्कि भावी शिक्षा की एक संभावनापूर्ण दिशा के रूप में स्वीकार करें। जब शिक्षक तकनीक को मानवोचित स्पर्श, शैक्षिक सूझबूझ और रचनात्मकता के साथ अपनाता है, तब आभासी कक्षा भी ज्ञान, संवेदना और संवाद का सजीव केंद्र बन जाती है।

➢ संदर्भ :

- आर्य, & शचीन्द्र) .2020). ऑनलाइन शिक्षण और उसके निहितार्थ. *पाठशाला भीतर और बाहर*, *5*, 34-43.
- राजनाल, & श्रीधर) .2021). ऑनलाइन शिक्षक विकास.वनाओं की खोजनई सम्भा : *अज़ीम प्रेमजी यूनिवर्सिटी लर्निंग कर्व*, (3), 65-67.
- वट्टल, & अमिता) .2021). भविष्य के लिए तैयार विद्यार्थ. *Learning Curve*, 21-24.
- Bao, W. (2020). *COVID-19 and Online Teaching in Higher Education: A Case Study of Peking University*. *Human Behavior and Emerging Technologies, 2*(2), 113–115.
- Hodges, C., Moore, S., Lockee, B., Trust, T., & Bond, A. (2020). *The Difference Between Emergency Remote Teaching and Online Learning*. EDUCAUSE Review.
- Lockee, B. B. (2021). Online education in the post-COVID era. *Nature Electronics*, *4*(1), 5-6.
- OECD. *Education responses to COVID-19: Embracing digital learning and online collaboration*.
- UNESCO. *COVID-19: 10 Recommendations to plan distance learning solutions*.
- UNESCO. *Supporting distance learning during COVID-19*.